भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका

किसागोतमी

मोटे (रूक्ष) चीवर धारण
करने वालियों में 'अग्र'

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका

किसागोतमी

[मोटे (रूक्ष) चीवर धारण करने वालियों में 'अग्र']

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनं
लूखचीवरधरानं यदिदं किसागोतमी।”

“भिक्षुओ! मोटे (रूक्ष) चीवर धारण करने वाली मेरी
भिक्षुणी-श्राविकाओं में अग्र (श्रेष्ठतम) है ‘किसागोतमी’।”

– *अङ्गुत्तरनिकाय १.१.२४६*

अनित्यता का साम्राज्य

"अनित्यता हर किसी के भीतर है। यह हर किसी की पहुँच के भीतर है। कोई जरा भीतर झांक कर देखे तो यह वहां पर मौजूद मिलेगी – पर इसकी अनुभूति होना आवश्यक है।

"गृहस्थों के लिए अनित्यता एक ऐसा रत्न है जिसे संजोये रखने से वे अपने भीतर शांति एवं संतुलित ऊर्जा के भंडार का सृजन कर सकते हैं जिससे वे न केवल अपना, अपितु समाज का भी, कल्याण कर सकते हैं।"

- **सयाजी ऊ बा खिन**

THE REALM OF ANICCA

"Anicca is inside of everybody. It is within reach of everybody. Just a look into oneself and there it is — anicca to be experienced."

"Anicca is, for householders, the gem of life which they will treasure to create a reservoir of calm and balanced energy for their own well-being and for the welfare of society."

- **Sayagyi U Ba Khin**

भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका

किसागोतमी

विषयानुक्रमणिका

प्रस्तावना [ix]

अग्रश्राविका का परिचय.....१

वर्तमान कथा.....१

कल्याणमित्रता की महिमा.....१०

पापी मार की मक्कारी.....१२

अतीत कथा.....१४

परिशिष्ट

विद्या - अविद्या.....१५

विपश्यना साहित्य.....२३

विपश्यना साधना के केंद्र.....२६

प्रस्तावना

किसी महिला ने अपनी सहेली से पूछा – "क्या तुमने मेरा सोने का अमुक आभूषण देखा है?"

उत्तर मिला – "अरी! वह तो तेरे गले में ही पड़ा है।"

महिला ने टटोल कर देखा कि वह सचमुच वहीं पर विद्यमान है। उसे अपनी गल्ती का अहसास हुआ। वह स्वयं ही तो इस बारे में सुधबुध खोये बैठी थी।

ऐसे ही 'संसार की असारता' सर्वत्र विद्यमान है। यह कहां है इसके बारे में किसी को पूछने की जरूरत नहीं होती है।

इसकी खोज करने के लिए भी कहीं जाने की जरूरत नहीं होती है। हमारे भीतर-बाहर इसी का साम्राज्य है। पर हमें इसका अहसास नहीं होता क्योंकि हम इसकी सुधबुध खोये रहते हैं।

यदि यह सुधबुध वापस आ जाय तो बड़ा कल्याण होता है, जैसे उस महिला को अपना खोया हुआ आभूषण मिल गया।

'संसार की असारता' का प्रख्यापन तथागत करते हैं। इसी का दूसरा नाम है – 'अनित्यता'।

मृत्यु सभी प्राणियों का अनिवार्य धर्म-स्वभाव है। केवल गांव वालों का नहीं, केवल नगर वालों का नहीं, केवल एक कुल के लोगों का ही नहीं, यह तो देवताओं समेत सभी लोगों का धर्म-स्वभाव है। सभी अनित्यधर्मा हैं, सभी मरणधर्मा हैं। इस सच्चाई को जो नहीं समझते, वे पुत्रों, पशुओं और धन-संपत्तियों के प्रति आसक्त रहते हैं। मोह-मूढ़ता में बेहोश रहते हैं और जन्म-जन्मांतरों तक बार-बार मृत्यु के चंगुल में पड़ते रहते हैं। जैसे नदी में

एकाएक आयी हुई बाढ़ गहरी नींद में सोए हुए गांव को बहा कर ले जाती है, वैसे ही इन प्रमत्त-आसक्त लोगों को बार-बार मृत्यु बहा कर ले जाती है।

जब किसागोतमी नाम की महिला का इकलौता पुत्र शैशवावस्था में ही काल का ग्रास बन गया तब उसे बड़ा भारी दुःख हुआ। उस दुःख के मारे वह विक्षिप्त-सी हो गयी और दर-दर भटकती हुई अपने मृत पुत्र के लिए दवाई मांगती फिरी। पर मृतक को जिलाने की औषध कहां! तब उसे सुध नहीं आयी कि केवल उसी का पुत्र काल का ग्रास नहीं बना है। सभी प्राणी अनित्यधर्मा हैं।

अस्तु, अनित्यता के साम्राज्य की सुधबुध खोये हुए वह कष्ट पाती रही पर जब तथागत के संपर्क में आयी और उन्होंने अपनी देशना से उसके भीतर अनित्यबोध जगाया तब उसकी सुध वापस लौट आयी और उसने अपना होश संभाला। जैसे ही उसे स्पष्ट हुआ कि विश्व का सारा प्रपंच अनित्यता का खेल है तब वह तथागत की शरण में चली गयी। फिर उनसे अनुमति प्राप्त कर वह प्रव्रजित हुई और अंततः उसने अर्हत्व-लाभ किया और आगे के भव-संसरण से सदा के लिए मुक्ति पायी।

जिन साधक-साधिकाओं ने विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी अथवा उनके द्वारा मनोनीत सहायक आचार्यों के सान्निध्य में विपश्यना साधना का अभ्यास किया है उन्हें भली-भांति विदित है कि विपश्यना का अभ्यास करते समय यह निर्देश अनिवार्य तौर पर सुनने को मिलते हैं –

'अनित्यबोध जगा रहे

और

अनित्यबोध के आधार पर समता पुष्ट होती रहे।'

वस्तुतः तथागत की शिक्षा का यही मूल मंत्र है। इसी को भावित करते रहने से सदा के लिए सारे दुःखों से छुटकारा मिल पाता है। यही 'विद्या' है। इसी का अभाव 'अविद्या' है। अनित्यबोध जगा रहने से अविद्या का प्रहाण होता रहता है जैसा कि विपश्यनाचार्य श्री गोयन्काजी के आचार्य सयाजी ऊ बा खिन भी कहा करते थे –

"As the appreciation of Anicca grows, so will the veil of ignorance fade away."

["जैसे-जैसे अनित्यता की समझ बढ़ती जाती है वैसे-वैसे अविद्या का आवरण क्षीण होता जाता है।"]

विपश्यना विशोधन विन्यास